*उभरते वित्तीय परिदृश्य में सांविधिक लेखा परीक्षकों की भूमिका**

एम राजेश्वर राव

मुझे वाणिज्यिक बैंकों और एआईएफआई की सांविधिक लेखापरीक्षा के मुद्दे पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए आज यहां उपस्थित होने पर प्रसन्नता हो रही है। कई मायनों में, हम, विनियामकों / पर्यवेक्षकों के रूप में और आप लेखा परीक्षकों के रूप में, एक समान लक्ष्य साझा करते हैं। लेखा परीक्षक वित्तीय प्रणाली सही रहे ये सुनिश्चित करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि वे यह सुनिश्चित करके विनियामक निरीक्षण के रखरखाव में सहायता करते हैं कि वित्तीय विवरण विनियमित इकाई (आरई) के मामलों की सही और निष्पक्ष तस्वीर पेश कर रहा है। सांविधिक लेखा परीक्षक लेखापरीक्षित वित्तीय विवरणों में हितधारकों का विश्वास बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और यह बैंकिंग उद्योग के मामले में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जहां संपूर्ण साम्राज्य 'विश्वास' पर बनाया गया है और सबसे बड़े बाह्य हितधारक अर्थात् जमाकर्ता खंडित और असंगठित हैं। इसलिए, रिज़र्व बैंक की बैंकिंग और वित्तीय उद्योग के लिए ठोस और उच्च गुणवत्ता वाले लेखांकन और प्रकटीकरण मानकों को बढ़ावा देने के साथ-साथ पारदर्शी और तुलनीय वित्तीय विवरण रखने में बहुत रुचि है जो बाज़ार अनुशासन को मजबूत करते हैं।

लेखा परीक्षक महत्वपूर्ण हितधारक हैं

एक इकाई की वित्तीय रिपोर्ट अपने वित्तीय प्रदर्शन के साथ-साथ जोखिम प्रोफ़ाइल का एक पटल प्रदान करती है और इसलिए, वित्तीय रिपोर्टिंग को अक्सर एक इकाई और उसके बाह्य हितधारकों के बीच "संचार" के लिए "भाषा" के रूप में संदर्भित किया जाता है। "संचार" केवल तभी प्रभावी हो सकता है जब प्रबंधन और हितधारक दोनों एक ही "भाषा" बोलते हों। इसके लिए, हमें नियमों और सिद्धांतों के एक सेट के रूप में एक आम भाषा की आवश्यकता है, जहां लेखांकन मानक खेल में आते हैं। सामान्य संहिताबद्ध सिद्धांतों और मानकों के एक सेट के आधार पर तैयार किए गए वित्तीय विवरण सूचना विषमता को कम करते हैं; संस्थाओं और सभी क्षेत्रों के बीच तुलनात्मकता और पारदर्शिता को बढ़ाते हैं; और वित्तीय रिपोर्टिंग पारिस्थितिकी तंत्र के माध्यम से प्रदान की गई जानकारी को प्रासंगिक और विश्वसनीय बनाते हैं। इस तरीके से तैयार किए गए वित्तीय विवरण उपयोगकर्ताओं और हितधारकों को इकाई की संसाधन स्थिति, इनके खिलाफ किए गए दावों, संसाधनों और दावों में परिवर्तन के स्रोतों, और भविष्य के नकदी प्रवाह के समय और अनिश्चितता को समझने और आकलन करने में मदद करते हैं जो उन्हें प्रबंधन को चलाने में सक्षम बनाता है।

विनियामक इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण हितधारक हैं। एक इकाई की वित्तीय स्थिति की जानकारी उसके विनियामक द्वारा किए गए आकलन से प्राप्त होती है। लेखापरीक्षित वित्तीय विवरण भी रिज़र्व बैंक द्वारा निर्धारित विवेकपूर्ण विनियमों के महत्वपूर्ण तत्वों का आधार बनते हैं। पूंजी और लीवरेज अनुपात, चलनिधि की स्थिति, हानि और प्रावधानों की गणना आदि विनियमित संस्थाओं द्वारा तैयार किए गए सटीक और पारदर्शी वित्तीय विवरणों पर निर्भर करते हैं। वित्तीय विवरण केवल तभी सटीक हो सकते हैं जब लेखांकन मानकों की सही व्याख्या की जाती है और लगातार लागू किया जाता है। लेखा परीक्षक अभिभावक हैं जिनसे इस प्रक्रिया की सटीकता सुनिश्चित करने की अपेक्षा की जाती है। वे प्रबंधन और हितधारकों के बीच सेतु भी हैं। वे सुनिश्चित करते हैं कि प्रबंधन का निर्णय मजबूत है और इकाई ने लेखांकन मानकों का पालन किया है।

विनियामक का हित उसके द्वारा विनियमित संस्थाओं में मामलों के निष्पक्ष और पारदर्शी प्रतिनिधित्व तक सीमित नहीं है। बैंक और वित्तीय संस्थान भी वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्ता हैं और काफी हद तक उनकी भलाई उन संस्थाओं से जुड़ी हुई है जिन्हें वे उधार देते हैं या निवेश करते हैं। इसलिए, हम सुदृढ़ लेखा परीक्षा प्रथाओं के समान रूप से पक्ष में हैं जिसके परिणामस्वरूप उच्च गुणवत्ता वाली कॉर्पोरेट रिपोर्टिंग होती

* श्री एम राजेश्वर राव, उप गवर्नर द्वारा 9 जुलाई 2024 को मुंबई में वाणिज्यिक बैंकों और अखिल भारतीय वित्तीय संस्थानों (एआईएफआई) के सांविधिक लेखा परीक्षकों और मुख्य वित्तीय अधिकारियों के सम्मेलन में दी गई टिप्पणी। जयकर मिश्रा, संदीप महाजन और प्रदीप कुमार द्वारा प्रदान किए गए इनपुट की सराहना की जाती है।

है। हम राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय लेखांकन और लेखा परीक्षा मानक सेटिंग के क्षेत्र में विकास की बारीकी से निगरानी करते हैं।

इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, हम बैंकिंग क्षेत्र में लेखांकन मुद्दों पर भारत में चार्टर्ड एकाउंटेंट्स संस्थान (आईसीएआई) के साथ मिलकर काम करना जारी रखते हैं। अक्तूबर 2001 में भारतीय रिज़र्व बैंक ने लेखा मानकों के अनुपालन में कमियों की पहचान करने के लिए आईसीएआई के तत्कालीन अध्यक्ष श्री एन डी गुप्ता की अध्यक्षता में एक कार्यदल का गठन किया था। समूह की सिफारिशों के आधार पर, लेखांकन मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए मार्च 2003 में बैंकों को दिशानिर्देश जारी किए गए थे। हमने आईएनडी एएस को अपनाने की दिशा में आगे बढ़ने के रोड मैप पर उद्योग और आईसीएआई के साथ मिलकर काम किया था और बैंकों में इंड एएस कार्यान्वयन के मुद्दों से निपटने के लिए एक कार्य समूह की स्थापना की थी।

सिद्धांत आधारित विनियामक वातावरण में लेखा परीक्षकों की भूमिका

रिज़र्व बैंक, पिछले कुछ समय से, सिद्धांत आधारित विनियमों के साथ नियम-आधारित विनियमों को पूरक कर रहा है ताकि आरई को उनके व्यवसाय निर्णय लेने में लचीलापन मिल सके। यह प्रक्रिया भारतीय वित्तीय क्षेत्र के अधिक परिपक्वता प्राप्त करने के साथ विकसित हुई है। सिद्धांत-आधारित नियम लेखांकन के एक पहलू को भी शामिल करता है जो लेनदेन को रिकॉर्ड करने के लिए निर्देशात्मक, नियम आधारित मानदंडों से दूर जाने को प्रतिबिंबित करेगा। मैं हाल के दो उदाहरण देता हूं।

पहला दिशानिर्देश बैंकों में निवेश पोर्टफोलियो के वर्गीकरण और मूल्यांकन से संबंधित है। 1 अप्रैल 2024 से प्रभावी संशोधित मानदंड बड़े पैमाने पर बैंकों के निवेश पोर्टफोलियो के वर्गीकरण, मूल्यांकन और संचालन पर दिशानिर्देशों को वैश्विक वित्तीय रिपोर्टिंग ढांचे के साथ संरेखित करते हैं। इन मानदंडों में बैंकों को वित्तीय आस्तियां (व्यवसाय मॉडल) रखने के इरादे और उद्देश्य और ऐसी आस्तियों के संविदात्मक नकदी प्रवाह विशेषताओं के आधार पर निवेश पोर्टफोलियो को वर्गीकृत करने की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, बैंकिंग बुक और ट्रेडिंग बुक के बीच एक आस्ति के वर्गीकरण में महत्वपूर्ण पूंजी निहितार्थ हो सकते हैं। इन पहलुओं को प्रबंधन निर्णय के व्यापक उपयोग की आवश्यकता होगी। हम उम्मीद करते हैं कि लेखा परीक्षक विनियमों को ध्यान से समझेंगे और यह सुनिश्चित करेंगे कि बैंक न केवल विनियमों का पालन करें बल्कि विनियामक इरादे का भी पालन करें।

दूसरा उदाहरण अपेक्षित क्रेडिट हानि (ईसीएल) आधारित प्रावधान मानदंडों का है। यह इस समय एक कार्य-प्रगति है। हमने एक चर्चा पत्र (डीपी) जारी किया है और इसमें शामिल महत्वपूर्ण बदलावों पर स्वतंत्र इनपुट प्राप्त करने के लिए एक बाहरी कार्य समूह भी स्थापित किया गया। प्रस्तावित ईसीएल ढांचे का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि आरबीआई द्वारा निर्धारित व्यापक ढांचे के भीतर, बैंक ऋण हानि प्रावधानों का आकलन करने के लिए विभिन्न पद्धतियों और मॉडलों का उपयोग कर सकते हैं। यह विनियामकों और लेखा परीक्षकों दोनों के लिए एक अनूठी चुनौती पेश करेगा। सांविधिक लेखा परीक्षकों के रूप में, आपको स्वयं को संतुष्ट करने की आवश्यकता होगी कि बैंक ऐसे प्रावधानों की सही गणना कर रहा है और विनियमित संस्थाओं द्वारा नियोजित मॉडल मजबूत हैं।

विनियमों के सिद्धांत आधारित दृष्टिकोण की स्थापना इस विश्वास पर की गई है कि वित्तीय रिपोर्टिंग लेनदेन की आर्थिक वास्तविकता को दर्शाती है। हालांकि, सिद्धांत-आधारित मानकों के प्रयोग के लिए प्रबंधन निर्णय के महत्वपूर्ण उपयोग की आवश्यकता होती है। कभी-कभी, प्रबंधन लेखांकन अनुमानों का चयन कर सकता है जिसमें तटस्थता या पूर्वाग्रह से स्वतंत्रता की कमी हो सकती है। यह इस संदर्भ में है कि लेखापरीक्षा में अधिक कठोरता और संशयवाद का निर्माण आवश्यक हो जाता है। हालांकि, ऐसा करने के लिए विशेष कौशल की आवश्यकता हो सकती है और इन परिवर्तनों और चुनौतियों को संभालने के लिए अतिरिक्त क्षमता के निर्माण पर काम करना शुरू करना समझदारी होगी।

इस संबंध में, मैं आईएनडी एएस कार्यान्वयन के संबंध में एनबीएफसी में ऐसे सिद्धांत-आधारित दिशानिर्देशों के कार्यान्वयन के साथ अपने अनुभव को भी साझा करना चाहता हूं। हमारे आकलन से पता चलता है कि सिद्धांतों-आधारित

मानकों द्वारा पेश किया गया लचीलापन, जबकि मूल्यवान है, लेकिन कुछ मामलों में कम हो गया है जहां उनके प्रयोग का संबंध है। मैं उन कतिपय मुद्दों और चुनौतियों का उल्लेख करना चाहूंगा जिनका हमने सामना किया है और जिनका लेखापरीक्षकों द्वारा अधिक सावधानीपूर्वक मूल्यांकन किया जा सकता था।

- हालांकि मानक परिशोधन लागत श्रेणी के तहत आस्तियों से बिक्री की अनुमति देते हैं, एक इकाई को यह आकलन करने की आवश्यकता होती है कि इस तरह की बिक्री संविदात्मक नकदी प्रवाह एकत्र करने के उद्देश्य के अनुरूप कैसे है। व्यवहार में, हमने देखा है कि प्रतिभूतिकरण और प्रत्यक्ष हस्तांतरण के माध्यम से परिशोधन लागत श्रेणी से महत्वपूर्ण बिक्री हुई है। यह स्पष्ट नहीं है कि इस तरह की बिक्री व्यवसाय मॉडल के अनुरूप कैसे है जिसका उद्देश्य संविदात्मक नकदी प्रवाह एकत्र करने के लिए आस्ति रखना है।
- एक और उदाहरण यह है कि आईएनडी एएस 109 के तहत निर्धारित हानि ढांचा कैसे लागू किया जाता है। जबकि ढांचा दूरदर्शी है और चरण 1 से चरण 2 तक आस्तियों के आवागमन के लिए क्रेडिट जोखिम (एसआईसीआर) में किसी भी महत्वपूर्ण वृद्धि का आकलन केवल पिछले दिनों के देय (डीपीडी) की तुलना में अधिक दूरंदेशी मानदंडों में कारक होना आवश्यक है, यह देखा गया है कि कुछ एनबीएफसी मुख्य रूप से 30 डीपीडी मानदंडों पर भरोसा करते हैं। डीपीडी एक लैगिंग संकेतक होने के नाते, हमेशा ईसीएल के दूरदर्शी दृष्टिकोण का उपयोग करने के साथ एक समान नहीं होता है।
- आस्ति पुनर्निर्माण कंपनियों (एआरसी) के मामले में, यह देखा गया कि प्रबंधन शुल्क और व्यय के लिए कोई प्रावधान नहीं बनाया गया था जो 180 दिनों से अधिक समय तक अप्राप्य रहे। ऐसी टिप्पणियों के कारण रिज़र्व बैंक के लिए विवेकपूर्ण दृष्टिकोण से दिशानिर्देश जारी करना आवश्यक हो गया ताकि पूंजी पर्याप्तता अनुपात की गणना करते समय ऐसे अप्राप्त प्रबंधन शुल्क विनियामक पूंजी से काट लिए जाएं।

उपर्युक्त हाइलाइट किए गए उदाहरण सिद्धांत आधारित ढांचे में पेश किए गए लचीलेपन का उपयोग करने की आरई की हमारी चिंता को इस तरह से सामने लाते हैं जो पूर्वाग्रह से मुक्त नहीं है। हमारा विचार है कि ऐसे मुद्दों के लिए लेखा परीक्षकों से संशयवाद के ऊंचे स्तर की आवश्यकता होती है। स्वतंत्र मूल्यांकनकर्ताओं के रूप में, लेखा परीक्षकों को प्रबंधन के निर्णय और मान्यताओं का गंभीर मूल्यांकन करना चाहिए और चुनौती देनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि ये लेखांकन मानकों और विवेकपूर्ण मानदंडों के अंतर्निहित सिद्धांतों के अनुरूप हैं।

राष्ट्रीय वित्तीय रिपोर्टिंग प्राधिकरण (एनएफआरए) ने हाल ही में एक गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी की लेखापरीक्षा रिपोर्ट के मामले में आदेश दिया है जिसमें कहा गया है कि लेखापरीक्षा ने ईसीएल प्रावधानों की तर्कसंगतता सुनिश्चित करने के लिए लेखापरीक्षा प्रक्रियाओं का पालन नहीं किया। यह लेखांकन प्रक्रिया में संभावित कमियों का एक कठोर अनुस्मारक भी है।

प्रकटीकरण ढांचा

सिद्धांत-आधारित ढांचे के बारे में चर्चा मुझे मेरी टिप्पणी के दूसरे भाग में लाती है जो प्रकटीकरण ढांचे पर केंद्रित है।

ऐसा कहा जाता है कि महान शक्ति के साथ बड़ी जिम्मेदारी आती है। मैं इसे पुन: कहना चाहूंगा – "लेखांकन और विवेकपूर्ण मानदंडों में अधिक लचीलेपन के साथ प्रकटीकरण में अधिक जिम्मेदारी आती है।" प्रकटीकरण पारदर्शिता की आधारशिला है। स्पष्ट प्रकटीकरण प्रबंधन क्या जानता है और बाहरी उपयोगकर्ता वित्तीय विवरणों से क्या अनुमान लगा सकते हैं, इसके बीच की खाई को पाटते हैं। लेकिन विवादास्पद सवाल यह है कि सूचना अधिभार के साथ उपयोगकर्ताओं पर भार दिए बिना स्पष्ट समझ सुनिश्चित करने के लिए कितना प्रकटीकरण 'अच्छा' है। व्यापक प्रकटीकरण और संक्षिप्तता के बीच संतुलन बनाना ही सबसे बड़ा मुद्दा है। जब प्रकटीकरण स्पष्ट और व्यापक होते हैं, तो वे बाजार में विश्वास को बढ़ावा देते हैं।

मैं इस संबंध में अपने अनुभवों को साझा करना चाहूंगा। हमने ईसीएल ढांचे के संदर्भ में एनबीएफसी द्वारा किए जा रहे प्रकटीकरण को देखा। कुछ एनबीएफसी की लेखांकन नीतियों के प्रकटीकरण के अवलोकन पर, हमने देखा कि अधिकांश

प्रकटीकरण काफी हद तक संबंधित लेखांकन मानकों के पाठ की पुनरावृत्ति थे। हम ईसीएल को मापने में लागू मान्यताओं और विधियों की चर्चा, सामूहिक आधार पर अपेक्षित नुकसान का आकलन करने के लिए साझा क्रेडिट जोखिम विशेषताओं, एसआईसीआर के निर्धारण में गुणात्मक मानदंड आदि जैसी कोई विशिष्ट अंतर्दृष्टि नहीं जुटा सके।

इस स्थिति को मापने के लिए, हम आरई को उनके प्रकटीकरण की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। लेकिन मैं यहां उपस्थित सभी लोगों के साथ-साथ बड़े लेखा परीक्षक समुदाय से भी आग्रह करूंगा कि वे प्रकटीकरण प्रथाओं का गंभीर मूल्यांकन करें और यह सुनिश्चित करें कि लेखांकन मानकों और अंतिम उपयोगकर्ताओं की जरूरतों को पूरा किया जाए। लेखा परीक्षकों की यह सुनिश्चित करने की भी जिम्मेदारी है कि संस्थाएं शासन और नियंत्रण तंत्र से संबंधित उपयुक्त गुणात्मक जानकारी प्रदान करें।

उभरती चुनौतियां और अपेक्षाएं

आगे बढ़ते हुए, अब मैं आगे आने वाली कुछ चुनौतियों और अपेक्षाओं को रेखांकित करता चाहूँगा।

यह पुनरावृत्ति के योग्य है कि यह लेखा परीक्षक की जिम्मेदारी है कि वह चल रही चिंता अवधारणा के उपयोग की उपयुक्तता का आकलन करने के लिए पर्याप्त लेखा परीक्षा साक्ष्य प्राप्त करे। इस बदलते परिवेश में, लेखा परीक्षक की भूमिका को केवल वित्तीय विवरणों की पुष्टि करने से ऊपर इकाई द्वारा अपनाए व्यवसाय संचालन और व्यवसाय मॉडल द्वारा उत्पन्न भौतिक जोखिमों का समग्र रूप से आकलन करने तक बढ़ाया जाना चाहिए। अतीत में, हमने ऐसे उदाहरण देखे हैं जहां इकाई का अस्थिर व्यापार मॉडल अंततः इसके पतन का कारण बना। सांविधिक लेखा परीक्षकों के रूप में, यह एक उभरती हुई चुनौती है जिस पर आपको विचार करने और अपनी लेखा परीक्षा प्रक्रिया में आत्मसात करने के तरीके खोजने की आवश्यकता है।

एक दूसरी उभरती चुनौती जलवायु और स्थिरता से संबंधित है। जलवायु जोखिमों के बढ़ने और हितधारकों की जांच तेज होने के साथ, मजबूत स्थिरता रिपोर्टिंग अब एक अच्छी स्थिति में नहीं होगी, लेकिन वित्तीय और गैर-वित्तीय संस्थाओं के लिए एक आवश्यकता बन जाएगी। रिज़र्व बैंक ने जलवायु संबंधी जोखिमों के प्रकटीकरण पर मसौदा विनियम भी जारी किए हैं। वित्तीय फर्मों में निहित जटिलता और विविधता जलवायु जोखिम के आकलन को चुनौतीपूर्ण बनाती है और इसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका है जो लेखा परीक्षक प्रक्रिया में निभा सकते हैं।

तीसरा मुद्दा जिस पर मैं प्रकाश डालना चाहूंगा वह प्रौद्योगिकी की बढ़ती भूमिका, विशेषकर बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र में से संबंधित है। उभरती प्रौद्योगिकियां बैंकिंग और वित्तीय परिदृश्य को काफी हद तक बदल रही हैं। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि इस प्रौद्योगिकीय क्रांति के कारण लेखा-परीक्षा करने का तरीका भी बदल रहा है। वित्तीय सेवाओं का लाभ उठाने के लिए डिजिटल चैनलों के उपयोग में घातांकीय वृद्धि ने तीसरे पक्ष के सेवा प्रदाताओं पर आरईएस निर्भरता को बढ़ा दिया है और उन्हें साइबर और आउटसोर्सिंग जोखिमों सहित परिचालन जोखिमों के लिए अनावृत कर दिया है। बदलते परिवेश में, पारंपरिक मूल परीक्षण और प्रक्रियाएं पर्याप्त/उपयुक्त लेखा परीक्षा साक्ष्य प्रदान नहीं कर सकती हैं। लेखा परीक्षकों को यह मूल्यांकन करने की आवश्यकता है कि क्या प्रबंधन आंतरिक नियंत्रण और वित्तीय रिपोर्टिंग पर उभरती प्रौद्योगिकियों के प्रभाव का सही आकलन कर रहा है। फिर, विक्रेता निर्भरता, सघनता के साथ-साथ नियंत्रण तंत्र से संबंधित गुणात्मक पहलुओं को लेखा परीक्षकों के विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

लेखा परीक्षा के प्रभावी होने के लिए, उसे उपयोगकर्ताओं की जरूरतों और अपेक्षाओं पर विचार करना चाहिए। ये उभरते मुद्दे इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि लेखा परीक्षकों की जिम्मेदारियां कई गुना बढ़ गई हैं और उन्हें इस बात पर विचार करना चाहिए कि नियंत्रणों के डिजाइन, कार्यान्वयन और प्रभावशीलता को समझने के लिए विशेष कौशल आवश्यक हैं या नहीं। लेखा परीक्षकों की इन अपेक्षाओं का जवाब देने की क्षमता और कौशल भी उतना ही महत्वपूर्ण है ताकि उचित आश्वासन प्रदान किया जा सके और अंततः उच्च गुणवत्ता वाले लेखा परीक्षा परिणाम सुनिश्चित किए जा सकें।

समापन विचार

अंत में, मैं यह कहना चाहूंगा कि बैंकों द्वारा तेजी से जटिल उभरते परिदृश्य की दिशा निर्धारित करने के बावजूद, विनियामकों

और लेखा परीक्षकों द्वारा एक सामंजस्यपूर्ण दृष्टिकोण जोखिम की पहचान और शमन में कमियों को दूर कर सकता है। इससे वित्तीय स्थिरता के हमारे साझा लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद मिलेगी और साथ ही व्यक्तिगत संस्थानों की मजबूती सुनिश्चित होगी। इसलिए, विनियामकों और लेखा परीक्षकों के बीच गहन जुड़ाव और सहयोग की आवश्यकता है। 'वित्तीय रिपोर्टिंग और बाह्य लेखा परीक्षा' पर प्रभावी बैंकिंग पर्यवेक्षण हेतु बेसल कोर सिद्धांतों में भी इस बात पर जोर दिया गया है जो पर्यवेक्षकों (विनियामकों) को बैंक परिचालनों से संबंधित सामान्य हित के मुद्दों पर चर्चा करने के लिए बाह्य लेखा परीक्षकों से आवधिक रूप से मिलने के लिए प्रोत्साहित करता है। मुझे पता है कि ऐसी चर्चाएं हमारी पर्यवेक्षी प्रक्रिया के दौरान होती हैं और हम इन चर्चाओं के दौरान लेखापरीक्षकों द्वारा किए गए योगदान को बहुत महत्व देते हैं।

अंत में, मैं यह स्वीकार करना चाहूंगा कि बाह्य लेखापरीक्षा एक मजबूत विनियामक ढांचे का एक अनिवार्य घटक है। हम अपनी वित्तीय प्रणाली की स्थिति, स्थिरता और अखंडता को सुनिश्चित करने के लिए घनिष्ठ सहयोग की उम्मीद करते हैं।

धन्यवाद। नमस्कार।